B A Part II (H)
Paper III

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Raj Nagar

Lecture IV

अनुसूचित जातियों की समस्याएं =)

(b) धार्मिक समस्याएं => जाति प्रथा के परम्परागत स्वरूप में अनुसूचित जातियों को अनेक धार्मिक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। अनुसूचित जातियों को अपवित्र माना गया और उन पर कई तरह की निर्योग्यताएं लाद दी गयी। इन लोगों को मन्दिर में प्रवेश, पवित्र नदी घाटों के उपयोग तथा पवित्र स्थानों पर जाने तथा अपने ही घरों पर देवी-देवताओं की पूजा करने का अधिकार नहीं दिया गया। इन्हें वेदों तथा अन्य धर्मग्रन्थों के अध्ययन की आज्ञा भी नहीं दी गई। हिन्दू जीवन में जिन 16 संस्कारों को आवश्यक समझा गया, इन जातियों को उन संस्कारों को पूरा करने की भी अनुमति नहीं दी गयी। यह मान लिया गया कि जो जातियां जन्म से ही अपवित्र हैं, उन्हें संस्कारों के द्वारा शुद्ध नहीं किया जा सकता।

(c) आर्थिक समस्याएं :- जाति व्यवस्था का स्वाभाविक परिणाम आर्थिक वैषम्य है। जो जाति जितनी नीची है, उसकी आर्थिक स्थिति उतनी ही कमजोर होती है। जिसके फलस्वरूप अनुसूचित जातियों को वे काम सौंपे गये जो सवर्ण द्वारा हिन्दुओं द्वारा नहीं किये जाते थे। आर्थिक निर्योग्यताओं के कारण धीरे धीरे की आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय हो गई कि उन्हें विवश होकर सवर्णों के झूठे भोजन, फटे पुराने वस्त्रों तथा त्याज्य वस्तुओं से ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ी। इनको मल-मूत्र उठाने, सफाई करने, मरे हुए पशुओं को उठाने तथा उनके चमड़े से वस्तुएं बनाने का कार्य सौंपा गया।

(d) राजनीतिक समस्याएं :- राजनीतिक क्षेत्र में भी अनुसूचित जातियों की समस्याओं का रूप बहुत गम्भीर रहा। इन जातियों को शासन के काम में किसी भी तरह का हस्तक्षेप करने, कोई सुझाव देने, सार्वजनिक सेवाओं के लिए नौकरी पाने अथवा व्यापार पाने का कोई अधिकार नहीं दिया गया। सामान्य अपराध के लिए उन्हें इतना कठोर दण्ड दिया जाने लगा कि वे कभी अपनी अधिकारों की माँग करने का साहस नहीं जुटा सके। परिणामस्वरूप उच्च जाति का कोई भी व्यक्ति अस्पृश्य जाति के किसी भी व्यक्ति को इच्छानुसार अपमानित और प्रताड़ित कर सकता था।